भारतीय इतिहास में तर्कशास्त्र की परम्परा

''अंधविश्वासी रीति-रिवाजों को जमीन में गाड़ दो!''
-ए आर वेंकटचलपति

आस्तिकता और नास्तिकता ईश्वरवाद और अनीश्वरवाद तथा जाति और समानता एक दूसरे के जन्मजात दुश्मन हैं। जब एक पैदा होता है तो दूसरा उसे चुनौती देने के लिए उठ खड़ा होता है। यही नहीं, जैसा कि देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय ने काल-क्रम में वर्णन किया है, प्राचीन भारत में जैसे ही वैदिक परम्परा सुदृढ़ हुई, निरीश्वावाद उभर आया। जब तिरुवल्लुवर ने अपने ग्रन्थ तिरुकुरल में पूछा, ''यदि कोई इश्वर के चरणों की वन्दना नहीं करता तो भला ज्ञान का क्या उद्देश्य है'', तो वे इस सच्चाई को स्वीकार कर रहे थे कि उस काल में उनसे भिन्न तरह से सोचने वाले विद्वान भी मौजूद थे, जो ईश्वर वन्दना में विश्वास नहीं करते थे।

ज्ञान का विकास प्रश्न उठाने से होता है। सवालों से वंचित और अपने ज्ञान से आत्मसंतुष्ट समाज केवल बांझ ही हो सकता है। एक तरफ़ जहां शासकों के संरक्षण में, उन्हीं से खुराक पाकर और सामाजिक असमानता को न्यायसंगत ठहराते हुए सुसंगठित धर्म फलता-फूलता रहा, उसी तरह दूसरी परम्पराएं भी बची रहीं।

समाज के धुंधलके से बाहर रहने वाले तमिलनाडु के विद्रोही गायक सिथार बहुत ही रूखेपन से सवाल पूछते हैं-

ये मन्त्र क्या है,
तुम अपने मुंह में क्या बुदबुदाते हो,
ये परिक्रमा क्या है,
ये रोपा हुआ पत्थर क्या है,
तुम इस पर क्यों फूल चढ़ाते हो,
क्या पत्थर बोल सकता है ?
जब भगवान तुम्हारे अंदर है
क्या कलही और पतीला जिनमें भोजन पकता है,
खाने का स्वाद ले सकते हैं ?

बाद के दौर में एक प्रसिद्ध अकवाल कविता में कपिलार पूछते हैं कि-

क्या बारिश कुछ खास लोगों के लिए होगी,
और दूसरों को वंचित कर देगी,
क्या हवाएं कुछ लोग़ों से भेदभाव करेंगी,
क्या धरती कुछ लोग़ों का भार सहने से
इन्कार कर देगी,
और सूरज कुछ लोग़ों को
धूप देने से मना कर देगा।

15 वीं शताब्दी में उत्तारानल्लूर नंगाई में पैचालूर की दलित लड़की, जिसे एक ब्राह्मण लड़के से प्रेम हो गया था, उसने उसे जिन्दा जलाने आये गांव वालों को चुनौती दी और कहा कि-

मैंने एक गुच्छा देखा,
बगुले के सर पर,
और एक सींग, मुर्गी के सर पर।
मैंने एक थुल-थुल पूंछ देखी।
मैंने पानी पर आग देखी।
इसलिए बात मत करो,
चार वेदों की,
ये कहकर कि तुम हो,
ऊंची जाति के।

धर्मग्रंथों ने ऐसी आवाज़ों का दबाने की कोशिश की लेकिन पीढ़ी दर पीढ़ी वाचिक रूप से प्रसारित होने के कारण वे जनता के बीच जिन्दा रहीं। उन्नीसवीं सदी में पश्चिमी देशों से शिक्षा प्राप्त, प्रबोधन काल के विचार से प्रभावित भारतीय बुद्धिजीवी अपने आधुनिक समानतावादी विचारों को पुष्ट करने के दौरान इन परम्पराओं के प्रति आकृष्ट हुए। बुद्धवाद की फ़िर से खोज ने तर्कशीलता के शास्त्रागार को उन्नत किया। एविपक्कम वेंकटचला रामास्वामी नायकर और अयुत्तीदास पांडितर जैसे निम्न जाति के सिद्धान्तकारों की जड़ें इसी तथाकथित शास्त्र विरुद्ध परम्परा में थी। यदि बंगाली ब्रह्म समाज में तमिलनाडु के सुधारों के स्तर की दीप्ती नहीं दिखती, तो इसके पीछे इसी परम्परा का योगदान है।

यही नहीं, सुब्रमण्यम भारती ने अपने अंतिम वर्षों में लिखा कि-'स्मृति और महाकाव्य और कुछ नहीं, बस नैतिकता सिखाने वाले किस्से हैं।' जब उनके शिष्य भारती दासन ने पेरियार के तर्कवादी आदर्शों का समर्थन किया, तो उनकी विवेचनाओं से प्रभावित कहनीकार पुदुमाया पित्थन ने उनका विरोध करने वाले दकियानूसों को यह कहकर चुप करा दिया कि 'क्या वे सिथारों से भी ज़्यादा रेडिकल थे।'

पेरियार के आत्मसम्मान आंदोलनों के शुरूआती प्रकाशनों में से एक था-वल्लार रामलिंगा स्वामिगल की कविताओं का संकलन। इस पुस्तक में वल्लार द्वारा लिखित रेडिकल भर्त्सना की ''अंधभक्ति के रीती-रिवाज़ों को ज़मीन में गाढ़ दो'' को प्रमुखता से शामिल किया गया था। भगत सिंह का मैं नास्तिक क्यों हूं और धर्म के बारे में लेनिन के लेखों का अनुवाद भी पेरियार प्रेस से छपे थे।

1943 में सी एन अन्नादुरई ने जब ''आग को फैलने दो'' की घोषणा की ओर कम्बार रामायण और पेरिया पुराणम को जलाने का आह्वान किया तो इश्वर में विश्वास करने वाले तमिल विद्वान सोम सुंदर भारती और आर पी सेथू पिल्लई इस मुद्दे पर वाद-विवाद के लिये अन्ना से मिले। शब्द से शब्द का और विचार से विचार का टकराव हुआ। गोलियों और खून का नहीं। हर नास्तिक इतना सौभाग्यशाली नहीं होता कि डावकिन्स की तरह ऑक्सफोर्ड की कुर्सी हासिल कर पाये। वल्लालर रहस्यमयी परिस्तिथियों में गायब हो गये। पाइचालुर के विद्रोही बेरहमी से मार डाले गये। नरेन्द्र दाभोलकर का शरीर भले ही गोलियों से छलनी कर दिया गया, लेकिन शब्द, गीत और विचार अभी भी जिन्दा हैं।

देश की इज्जत को बट्टा लगाती एक राजनयिक-देवयानी खोब्रागड़े

देवयानी : देश की इज्जत से खिलवाड़

अमेरिका में भारतीय दूतावास में कार्यरत देवयानी खोब्रागड़े आखिरकार 'यू.एन.ओ' की ढ़ाल लेकर भारत भाग आई। ध्यान रहे कि उनपर अमेरिका में चल रहा मुकदमा कायम रहेगा और आज नहीं तो कल उन्हें उसका सामना करना ही पड़ेगा या अपनी नौकरानी से समझौता करके उसे उसकी पूरी पगार जुर्माने सहित देनी पड़ेगी। इस पूरे प्रकरण को भारतीय सरकार और राजनीतिक पार्टियों ने इस तरह प्रस्तुत किया मानो अमेरिका ने नौकरानी के अधिकारों की रक्षा करके भारत की इज्जत पर हाथ डाला हो। भारत में रोजाना खुलेआम श्रमिकों का शोषण कर रहे इन लोग़ों से तो और क्या अपेक्षा की जा सकती थी लेकिन दुख की बात तो यह है कि भारत की वामपंथी पार्टियां तक इस अन्ध राष्ट्रवाद की रौ में बह गई। वर्ना उनकी मांग तो यह होनी चाहिए थी कि अपनी नौकरानी का शोषण करने के कारण गिरफ़्तार हुई देवयानी को देश की इज्जत को बट्टा लगाने के कारण तुरन्त नौकरी से बर्खास्त किया जाये।

संक्षेप में मोटे तौर पर किस्सा ये है कि देवयानी अपनी नौकरानी संगीता रिचर्डस को अमेरिकी कानूनों में तय न्यूनतम वेतन से कम देती थी लेकिन उसके सारे कागजातज झूठे ज़्यादा वेतन के बनाकर और झूठा शपथपत्र देकर उसे अमेरिका ले गई थी। इस बात पर उसे वहां गिरफ़्तार किया गया और मुकदमा चलाया गया। इससे पहले देवयानी से कई बार बात करके नौकरानी का पूरा वेतन दिलवाने की कोशिश की गई। लेकिन घरेलू नौकरों के शोषण के आदी और भारत में राजे महाराजाओं की तरह की 'आई.ए.एस' और आई.एफ. एस' जैसी नौकरी में रत देवयानी को यह बात नागवार गुजरी। उसने उल्टा नौकरानी के ऊपर दिल्ली में एक मुकदमा दर्ज करवा दिया और उसके पति और बच्चों पर जो दिल्ली में थे दबाव डाला जाने लगा। इस पर अमेरिकी सरकार संगीता के पति व बच्चों को दिल्ली से अमेरिका ले गई और देवयानी पर मुकदमा दर्ज कर दिया। 'आप' पार्टी के कारण संकट में घिरी कांग्रेस के लिये छदम राष्ट्रभक्ति दिखाने का यह सुनहरी मौका था। सो बज़ाय देवयानी पर एक श्रमिक के शोषण और जालसाज़ी के आरोप में कार्यवाही करने के उसने अमेरिकी सरकार पर हल्ला बोल दिया और देवयानी को राजनीतिक छूट हासिल करवाने के लिये आनन-फानन में उसे न्यूयार्क में ही यू.एन.ओ. में भारतीय प्रतिनिधि के तौर पर 'पोस्ट' कर दिया।

अगर किसी श्रमिक का मामला होता तो यही सरकार कोई भी कदम उठाने से पहले महीनों सोचती और अमेरिका के साथ सम्बन्ध खराब होने के खतरे की दुहाई दी जाती। दूसरी तरफ़ पुराने उदाहरण देकर ऐसा स्थापित किया जाने लगा मानो अमेरिका को तो भारतीयों की बेइज्जती करने की आदत हो। स्मरणीय है कि ऐसे ही एक मामले में वहां भारत के एक राजनयिक को 75000 डालर में समझौता करना पड़ा था जो भारत सरकार ने भरे थे यानी जनता से ही वसूल किये गये थे। आखिर कब तक भारतीय जनता का खून इन जोकों को चुसवाया जाता रहेगा ?

इधर देवयानी के पिता बम्बई में इस तरह धरने पर बैठे जैसे उनकी बेटी किसी देशभक्ति के आन्दोलन में गिरफ़्तार हुई हो। कहा जा रहा है कि गिरफ़्तारी गलत तरीके से हुई और मुकदमा भी गलत बनाया है। तो भई उस मुकदमे को वहां लड़िये, जीतिये और सिद्ध कीजिए कि आप सही थे। इस चक्कर में देश को अन्ध राष्ट्रवाद में झोंकने की जरूरत क्या थी ? दूसरी तरफ़ दिल्ली में अमेरिकी दूतावास को दी हुई बहुत सारी सुविधायें खत्म कर दी गयी या उन पर सवाल किये गये जो कि कानून या नियमों से परे थी। यह अपने आप में सिद्ध करता है कि किस कदर भारतीय सरकार और कांग्रेस और बी.जे.पी जैसी पार्टियां अमेरिका की गुलाम थीं। आपको किसने कहा था ये छूट देने को ?

इस सम्बन्ध में सारे मज़दूर संघों की चुप्पी भी कष्टदायक है। उनको चाहिए था कि संगीता रिचर्डस के पक्ष में आवाज उठाते और देवयानी जैसी भ्रष्ट को हीरो बनने से रोकते। ध्यान रहे कि आदर्श सोसायटी घोटाले में देवयानी और उसके पिता दोनों का नाम आया है। अगर खोब्रागड़े जैसे प्रकरणों द्वारा देशभक्ति की आड़ में फैलाये/उभारे जा रहे अन्ध राष्ट्रवाद के खिलाफ़ मज़दूर संघों ने आवाज नहीं उठाई तो यह सारे मज़दूर आन्दोलन को लील जायेगा।

-अजातशत्रु

क्रिकेट में भ्रष्टाचार

क्रिकेट एक खेल है, लेकिन हमारे देश में यह जुआ, सट्टेबाजी और काले धन को सफेद करने का एक धंधा बन गया है। देश में कई खेलों में खिलाड़ियों को सुविधाओं का नितांत अभाव हैऔर इसके चलते खिलाड़ी अपनी प्रतिभाओं का सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, वहीं क्रिकेट में पैसा ही पैसा है। एक-एक क्रिकेटर को करोड़ों रुपये मिलते हैं। खिलाड़ियों के चयनकर्ताओं को 60 लाख रुपये सालाना मिलता है। कहा जा सकता है कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड एक निजी संस्था है। उसके पास अकूत संसाधन हैं और वह अपने खिलाड़ियों, चयनकर्ताओं, उद्घोषकों, प्रशिक्षकों आदि को मोटी रकम देता है। सवाल यह है कि ये पैसा कहां से आ रहा है, उसकी पूरी जांच होनी चाहिए। आखिर हमारे देश में एक लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था है (यदि है)और हर तरह की गड़बड़ पर निगाह रखना, उसे रोकना राज्य की जिम्मेदारी है। जब से इंडियन प्रीमियर लीग बना, खिलाड़ियों की खरीद बिक्री शुरू हुई और क्रिकेट टीमों को निजी कम्पनी की तरह चलाया जाने लगा, तबसे क्रिकेट में सट्टेबाज़ी और भ्रष्टाचार सारी हदें पार कर चुका है। ताजा उदाहरण श्रीसंत, शिल्पा सेठ्ठी और उनके पति राज कुन्द्रा द्वारा सट्टेबाज़ी में लिप्त होने का खुलासा है। क्रिकेट अब खेल न होकर काली कमाई का कुख्यात क्षेत्र बन गया है। क्रिकेट में भारी मात्रा में धांधली है, यही कारण है कि आज तमाम राजनेता और अवैध कमाई करने वाले क्रिकेट से जुड़ना चाहते हैं। अरुण जेटली, लालू, ज्योतिरादित्य सिंधिया से लेकर शरद पंवार तक कितने ही नेता हैं जो विभिन्न क्रिकेट संगठनों से जुड़े हैं। क्रिकेट में पैसा जहां से भी आता हो, यह पैसा तो जनता का ही है। इसलिए राज्य व्यवस्था का यह दायित्व है कि वह गड़बड़ घोटालों के बीच खेले जा रहे इस खेल की गहराई से जांच करें।

पूंजीवाद के लिए दंगे जरूरी

अखबारों में, टीवी चैनलों पर, जब भारत के किसी राज्य में हिन्दू-मुस्लिम दंगे दिखाये जाते हैं तो इन्हें किसी आश्चर्य के रूप में दिखाया जाता है। जैसे कुछ घंटों के तनाव ने दंगे का रूप ले लिया हो। यह पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा तैयार की गयी ज़मीन जो दंगों का कारण है उसे उज़ागर नहीं करता हैं पूंजीवाद में आर्थिक संकट आना नियति है। जिसे कोई रोक नहीं सकता है। जब यह संकटग्रस्त होती है तब शासक वर्ग को अपना अंत दिखाई देने लगाता है क्योंकि आर्थिक मंदी करोड़ों लोग़ों का जीवन संकट में डाल देती है। अगर यह लोग समझ गये कि हम करोड़ों लोगों की समस्या का कारण यह पूंजीवादी व्यवस्था है तब वह उसे उखाड़ फेंकने में देर नहीं करेंगे। शासक अपना स्वर्ग छिनने नहीं देना चाहता इसलिए वह फ़ासीवादी राजनीतिक पार्टियां खड़ी करता है। अपने तमाम संसाधन फ़ासीवादी विचार फ़ैलाने में झोंक देता है।

न्यूज चैनलों पर दिखाया जाता है कि पांच करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठिये हैं। भारत में संघ परिवार प्रचारित करता है कि बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण भारतीय युवाओं को रोज़गार नहीं मिल रहा है। उनका मतलब बांग्लादेशी मतलब मुसलमान। उनका इशारा भारतीय मुस्लिमों से होता है। फ़ासीवाद विचार हर समस्या का कारण अल्पसंख्यकों को मानता है अगर ये ना होते तो समस्या खत्म हो जायेगी जैसे 1929 की महामंदी से जर्मनी बर्बाद हो गया था और फ़ासीवाद नेता हिटलर ने सभी समस्याओं का कारण यहूदियों को बताया और अन्तिम हल ढूंढा गैस चेम्बर।

वह मीडिया का, इस विचार को फ़ैलाने के लिए उपयोग करता है। देश में कहीं भी धमाका हो वह कुछ ही मिनटों में बताने लगता है कि धमाका फ़लाने मुस्लिम संगठन ने किया है। इण्डियन मुजाहिद्दीन, लश्कर या जैश जैसे तमाम नाम हैं। तो किसी मुस्लिम युवक को पुलिस पूछताछ के लिए ले जाती है तो मीडिया खबर चलाता है कि एक आतंकी गिरफ़्तार, चाहे कुछ देर बाद उस युवक को पुलिस छोड़ दे पर वह युवक आतंकी घोषित हो चुका होता है। और ऐसी खबरें पढ़कर सुनकर बहुसंख्यक हिन्दू भयभीत उद्वेलित होता है और उसे हर मुस्लिम संभावित आतंकी दिखता है।

शासक वर्ग अपने फ़ासीवादी विचार स्कूली शिक्षा के रूप में देता है। भारतीय स्कूलों में इतिहास में मुस्लिमो को आक्रमणकारी और उस समय के राजाओं को हिन्दू राजा कहता है। इससे उस छात्र के मन में मुस्लिमों की क्रूर छवि बन जाती है।

हमें स्कूली शिक्षा में बताया जाता है औरंगजेब बहुत क्रूर मुस्लिम शासक था। उसने गद्दी के लिए अपने भाइयों की हत्या की थी वहीं हमें सम्राट अशोक को महान सम्राट के रूप में पढ़ाया जाता है। अशोक ने भी तो गद्दी के लिए अपने सभी भाइयों की हत्या की थी। जब हमें पढ़ाया ही यह जाता है कि मुस्लिम क्रूर आक्रमणकारी थे तो मुस्लिमों के प्रति आदरभाव कैसे आ सकता है। किसी राजा के निजी स्वार्थ के लिए किया गया हमला उसकी पूरी जाति के लोग़ों का हमला कैसे हो सकता है। इसमें पूरी जाति का क्या दोष ?

संघ परिवार बहुसंख्यक हिन्दुओं को आतंकित करने के लिए तरह-तरह की अफ़वाहें फैला रहा है कि मुसलमान योजनाबद्ध तरीके से हिन्दुओं की लड़कियों को प्रेम जाल में फ़ंसाकर बेच देते हैं। उनका यौन शोषण करते हैं। उसे 'लव जिहाद' का नाम देते हैं और कि मुसलमान दर्जनों बच्चे पैदा करते हैं। अगर हिंन्दू नहीं जागा तो वह अल्पसंख्या में हो जायेंगे फ़िर मुस्लिम हिन्दुओं पर कब्ज़ा कर लेंगे। कि मुसलमान वंदे मातरम नहीं गाते। यह उनके देशद्रोही होने के प्रमाण के रूप में संघ परिवार प्रचारित करता है। शासक वर्ग यह सब सचेतन कर रहा है। शासक वर्गों का वर्ग फ़ासीवादी राजनीति के बल पर ही कायम रह सकता है। जनता आपस में लड़ती रहे यही रचना शासक वर्गों ने बना रखी। इस रचना में साम्प्रदायिक दंगे पेड़ पर फल आने की तरह है जो समय-समय पर आते रहते हैं।

-महावीर लालकुंआ